समाज और संत के बीच लोक कल्याण हेतु सेतु बननेवाला महापुण्य का भागी होता है ।

संत श्री आशारामजी आश्रम द्वारा प्रकाशित

मूल्य : रु. ३/-

लोक कल्याण सेतु

• १५ जनवरी २०१२ • वर्ष : १५
• अंक : ७ (निरंतर अंक : १७५)

मासिक समाचार पत्र

ॐ आनंद...

ॐ माधुर्य...

मधुर शांति...

आत्मविश्रांति...

पूज्य संत
श्री आशारामजी बापू

अनेक ज्योतिषी, गणितज्ञ, वैज्ञानिक, धर्म-धुरंधर आये और अपने-अपने समय में एक सीमित क्षेत्र में अपने ढंग की पहुँच बनाकर चले गये । राजाओं का राज चला गया, रियासतें बदल गयीं । आधुनिक वैज्ञानिकों के बनाये नियमों में परिवर्तन हो गया । परंतु ब्रह्मज्ञानी महापुरुषों का स्वरूपानुभव अबदल है ।

यह कौन-सा युग है ?

'अध्यात्म-विज्ञान' का युग...
'आध्यात्मिक क्रांति' का युग...

आधुनिक विज्ञान ने जो तरक्की की है, वह अपनी जगह पर ठीक है परंतु हमारी युवा पीढ़ी से एक भूल तब होती है जब वह भौतिक तरक्की को ही सब कुछ मान बैठती है । अनेक लोग बात-बात में यही कहते नजर आते हैं कि 'विज्ञान का युग है, विज्ञान का युग है ।' ऐसा करके वे अध्यात्म व संतों-महापुरुषों से होनेवाले महान लाभ से वंचित रह जाते हैं । वास्तव में देखा जाय तो अध्यात्म ही सच्चा और सर्वश्रेष्ठ विज्ञान है । भगवान श्रीकृष्ण ने 'गीता' में अध्यात्म-विज्ञान के परमोच्च अनुभव से तृप्त सत्पुरुष का वर्णन ही इन शब्दों में किया है : **'ज्ञानविज्ञानतृप्तात्मा'...** ज्ञान यानी आत्मा-परमात्मा का शास्त्रोक्त शाब्दिक ज्ञान और विज्ञान यानी इसीका साक्षात् अपरोक्ष अनुभव । जो आत्मज्ञान और आत्मविज्ञान से तृप्त हो जाते हैं, उनके जीवन में संत कबीरजी की ये पंक्तियाँ चरितार्थ हो जाती हैं : **एकै साधे सब सधै ।**

आत्मविज्ञान के पूर्ण अनुभव से सम्पन्न महापुरुषों ने बाह्य विज्ञान के जगत में भी अनेक खोजें की हैं । हमारे ऋषियों ने तो विज्ञान में इतनी प्रगति कर ली थी कि आधुनिक विज्ञान को वहाँ पहुँचने में हजारों वर्ष भी कम पड़ेंगे । ब्रह्मनिष्ठ महापुरुष इस बात को भी जानते थे कि बाह्य विज्ञान व्यंजन-वानगियाँ बनाने की मशीनें दे सकता है पर भूख नहीं, स्प्रिंगयुक्त गद्देवाले बिस्तर दे सकता है नींद नहीं, युद्ध के लिए बम तो दे सकता है पर आंतरिक शांति नहीं । आंतरिक शांति तो अध्यात्म-विज्ञान से परितृप्त 'ज्ञानविज्ञानतृप्तात्मा' ब्रह्मज्ञानी सद्गुरु ही दे सकते हैं ।

पूज्य बापूजी कहते हैं : ''भागवत में आता है कि कर्दम ऋषि ने अपने योगबल से एक विमान बनाया था । वह सब सुविधाओं से सम्पन्न था, मन के संकल्प से चलता था । ईंधन, हवाईपट्टी की जरूरत नहीं थी और मौसम की अनुकूलता-प्रतिकूलता भी नहीं देखनी पड़ती थी । योग-सामर्थ्य के ऐसे कई पौराणिक-ऐतिहासिक प्रसंग हमने सुने हैं और इस जमाने में भी ऐसे योगियों के विषय में थोड़ा जानते भी हैं । मेरे गुरुदेव भगवत्पाद परम पूज्य साँईं लीलाशाहजी महाराज के जीवन में भी मैंने ऐसा बहुत कुछ योग का सामर्थ्य देखा है ।

(शेष पृष्ठ ७ पर)

भक्ति व्यर्थ नहीं जाती

(संत रैदासजी जयंती : ७ फरवरी)

ऐहिक विद्या पर मृत्यु का प्रभाव पड़ता है आत्मविद्या पर, अध्यात्मविद्या पर नहीं। ऐहिक विद्या मन-बुद्धि तक ही अपने संस्कार डालती हैं, अध्यात्मविद्या सूक्ष्म शरीर पर संस्कार डालती है। यही कारण है कि पिछले जन्म के योगी, भक्त व संत हमने देखे-सुने हैं पर पिछले जन्म का चिकित्सक, वकील आज तक नहीं देखा।

रैदासजी पिछले जन्म में ब्राह्मण थे और उनके द्वारा गुरु रामानंद स्वामी के प्रति गम्भीर अपराध हो जाने से गुरु के शापवश चर्मकार के यहाँ उनका जन्म हुआ। गुरुकृपा से उन्हें पूर्वजन्म का ज्ञान था, जिससे जन्मते ही उन्होंने माता का दुग्धपान करना छोड़ दिया क्योंकि उनकी ऐसी निष्ठा थी कि बिना गुरुमंत्र एवं गुरु-उपदेश के खाना-पीना निषिद्ध है। बालक की मूक पुकार गुरु रामानंद स्वामी को वहाँ खींच लायी। उन्होंने बालक को गुरुमंत्र दिया और 'रैदास' नाम रखा। फिर दुग्धपान करने की आज्ञा दी।

रैदासजी संतों की सेवा अत्यंत प्रेम से करते, घर की सब सामग्री सेवा में लगा देते थे। अतः पिता ने उन्हें घर से अलग कर दिया। अब वे घर के पिछवाड़े में एक छोटी-सी कुटिया बनाकर निश्चिंत हो के भगवान का भजन करते और जूतियाँ गाँठकर अपना निर्वाह करते। वे कहते :

जिहवा भजै हरि नाम नित, हत्थ करंहि नित काम।
'रविदास' भए निहचिंत हम, मम चिंत करैंगे राम॥

भक्तवत्सल भगवान अपने भक्त... **(शेष भाग पढ़ने हेतु देखें लोक कल्याण सेतु, अंक : १७५, जनवरी २०१२)**

विश्व संस्कृति का उद्गम स्थान भारत

भारतीय संस्कृति से विश्व की सभी संस्कृतियों का उद्गम हुआ है क्योंकि भारत की धरा अनादिकाल से ही संतों-महात्माओं एवं अवतारी महापुरुषों की चरणरज से पावन होती रही है। यहाँ कभी मर्यादापुरुषोत्तम श्रीराम अवतरित हुए तो कभी लोकनायक श्रीकृष्ण। संत एकनाथजी, कबीरजी, गुरु नानकजी, स्वामी रामतीर्थ, आद्य शंकराचार्यजी, वल्लभाचार्यजी, रामानंदाचार्यजी, भगवत्पाद साँईं श्री लीलाशाहजी महाराज आदि अनेकानेक संत-महापुरुषों की लीलास्थली भी यही भारतभूमि रही है, जहाँ से प्रेम, भाईचारा, सौहार्द, शांति एवं आध्यात्मिकता की सुमधुर सुवासित वायु का प्रवाह सम्पूर्ण विश्व में फैलता रहा है।

पूज्य बापूजी कहते हैं : ''भारतीय संस्कृति ने समाज को ऐसी दिव्य दृष्टि दी है, जिससे आदमी का सर्वांगीण विकास हो। मनुष्य कार्य तो करे लेकिन कार्य करते-करते कार्य का फल पशु की तरह भोगकर जड़ता की तरफ न चला जाय, इसका भी ऋषियों ने खूब ख्याल किया है।''

जर्मनी के प्रख्यात विद्वान मैक्समूलर भारतीय संस्कृति को समझने के बाद... **(शेष भाग पढ़ने हेतु देखें लोक कल्याण सेतु, अंक : १७५, जनवरी २०१२)**

चोर से बने कुबेर

(महाशिवरात्रि पर विशेष)

'शिव पुराण' की 'रुद्रसंहिता' में **एक** कथा आती है : काम्पिल्य नगर में एक बड़े प्रसिद्ध सदाचारी ब्राह्मण यज्ञ**दत्त** रहते थे। उनका पुत्र गुणनिधि कुसंग में पड़कर दुराचारी व जुआरी हो गया। यह बात पिता को पता चलने पर गुणनिधि पिता से भयभीत होकर घर से भाग गया। भटकते-भटकते, भूख-प्यास सहते-सहते वह एक दिन किसी शिवालय में पहुँचा। उस दिन महाशिवरात्रि थी। नैवेद्य चुराने की इच्छा से रात्रि में... **(शेष भाग पढ़ने हेतु देखें लोक कल्याण सेतु, अंक : १७५, जनवरी २०१२)**

संगीत का प्रभाव

न्यूरोलॉजिस्टों के अनुसार संगीत मस्तिष्क के दायें भाग से संबंधित होता है। संगीत के सुरों से पिट्यूटरी ग्रंथि से एंडोर्फिन हार्मोन का स्राव होता है। श्रेष्ठ संगीत से शरीर में केटेकोलेमाइंस (catacholamines) और एड्रेनेलीन का स्तर कम हो जाता है। इससे बढ़ी हुई हृदय गति, उच्च रक्तचाप तथा संगृहीत फैटी एसिड एवं लैक्टेट नामक विष का स्तर घट जाता है। अच्छा संगीत सुनने से आधासीसी (माइग्रेन) एवं तनाव कम हो जाता है। अर्धविक्षिप्त मस्तिष्क एवं उन्माद, मूर्च्छा रोग (हिस्टीरिया) के रोगियों को इससे आश्चर्यजनक लाभ होता है। संगीत का सर्वाधिक प्रभाव अंतर्मुखी व्यक्तियों पर होता है। संगीत की तरंगें अंतःस्रावी ग्रंथियों को... **(शेष भाग पढ़ने हेतु देखें लोक कल्याण सेतु, अंक : १७५, जनवरी २०१२)**

स्वास्थ्य वर्धक खजूर

खजूर मधुर, शीतल, पौष्टिक व सेवन करने के बाद तुरंत शक्ति-स्फूर्ति देनेवाला है। यह रक्त, मांस व वीर्य की वृद्धि करता है। हृदय व मस्तिष्क को शक्ति देता है। वात, पित्त व कफ इन तीनों दोषों का शामक है। यह मल व मूत्र को साफ लाता है।

कब्जनाशक, नशा-निवारक, आँतों की पुष्टि, हृदयरोगों में तन-मन की पुष्टि, शैयामूत्र, बच्चों के दस्त में आदि रोगों में खजूर के औषधि- प्रयोगों की विस्तृत जानकारी के लिए **(पढ़ें लोक कल्याण सेतु, अंक : १७५, जनवरी २०१२)**

आश्रम संचालित बाल-उत्थान के सेवाकार्य

बरसठी, जि. जौनपुर (उ.प्र.) तथा कामरेज, जि. सूरत (गुज.) के बच्चों में 'बाल संस्कार' सत्साहित्य का वितरण ।

पंचेड़, जि. रतलाम (म.प्र.) के बच्चों में सत्साहित्य तथा
सिकरी-फरीदाबाद (हरियाणा) में 'माँ-बाप को भूलना नहीं' कैलेंडरों का वितरण ।

भ्रामरी प्राणायाम करते बाड़मेर (राज.) के बच्चे तथा सूर्य को अर्घ्य देते हुए सम्बलपुर (ओड़िशा) के बच्चे ।

'देव-मानव हास्य प्रयोग' करते हुए दौंड, जि. पुणे (महा.) के विद्यार्थी तथा
ओढव-अहमदाबाद के विद्यालय में 'दिव्य प्रेरणा-प्रकाश ज्ञान प्रतियोगिता' का आयोजन ।

आश्रम द्वारा संचालित विविध सेवाकार्य

RNI No. 66693/97
RNP No. GAMC-1253-A/2012-14
Issued by SSP-AHD
Valid upto 31-12-2014
LWPP No. CPMG/GJ/45/2012
(Issued by CPMG GUJ. valid upto 30-06-2012)
Permitted to Post at AHD-PSO
from 18th to 25th of E.M.

कुरखेडा, जि. गडचिरोली (महा.) तथा रायपुर (छ.ग.) में कम्बलों का वितरण ।

बोईसर, जि. थाने (महा.) में अनाज तथा डिमना-जमशेदपुर (झारखंड) में मिठाई आदि का वितरण ।

रामनगर, जि. आणंद (गुज.) तथा हिंगणघाट, जि. वर्धा (महा.) के गरीबों में गर्म भोजन के डिब्बों का वितरण ।

पूज्य बापूजी के जीवन, उपदेश और योगलीलाओं पर आधारित

।। ऋषि दर्शन ।।

आध्यात्मिक मासिक विडियो मैगजीन का
दि.१५ जनवरी, मकर संक्रांति के पावन पर्व पर शुभारम्भ

सदस्यता शुल्क

वार्षिक - रु.४५०/- पंचवार्षिक - रु.१९००/-

सदस्य व सेवादार बनने हेतु सम्पर्क :
सभी आश्रमों एवं समितियों के ऋषि प्रसाद कार्यालय